वालिदैन की सुहबत व खिदमत

وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا

अच्छे तरीक़े से,	दुनिया में	और उन के साथ बसर कर

(Luqman: 15)

वालिदैन की सुहबत व खिदमत करना एक तरफ अल्लाह का हुक्म है और दूसरी तरफ इतना अज़ीम काम है कि ये इन्सान को जन्नत तक पहुँचा सकता है

क़ुरआन

Luqman

Post: 08

वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो!

وَصَاحِبْهُمَا	فِى الدُّنْيَا	مَعْرُوْفًا
और उन के साथ बसर कर	दुनिया में	अच्छे तरीक़े से,

(Luqman: 15)

हो सकता है वालिदैन बुढ़ापे या बीमारियों की वजह से चिड़चिड़े हो जाएं लेकिन अल्लाह का हुक्म है कि उन के साथ अच्छे अंदाज़ से रहा जाए, इसी में हर एक की आज़माइश है!

क़ुरआन

Luqman
Post: 09

बेहतरीन अंदाज़ में ख़िताब

يٰبُنَيَّ	اَقِمِ	الصَّلٰوةَ
ऐ मेरे बेटे!	क़ाइम कर	नमाज़

(Luqman: 17)

"يَا بَنِيَّ" यानी, "*ऐ मेरे बेटे!*"

हमेशा अपने घर वालों, बच्चों और आम लोगों को अच्छे अल्फाज़ और प्यारे नामों से खिताब कीजिये!

इआदह (क़ुरआन)

- माँ बाप की खिदमत करके मोमिन जन्नत का हक़दार हो जाता है! (وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا)
- माँ बाप चिड़चिड़े हों फिर भी उन के साथ अच्छे से रहिये! (وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا)
- हर एक को अच्छे और प्यारे नामों से पुकारिये! (يٰبُنَيَّ---)

इआदह (हदीस)

- अमल को मक़बूल बनाने के लिए अल्लाह की रिज़ा और रसूल ﷺ का तरीका सामने रखिये! (إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ---)
- अपने अमल और निय्यत को अच्छा रखिये, यही दोनों को अल्लाह देखता है! (يَنْظُرُ إِلٰى قُلُوْبِكُمْ و أَعْمَالِكُمْ)
- नेक निय्यत रखने पर एक मुकम्मल अज्र का हक़दार बनिए! (حَسَنَةً كَامِلَةً---)

पहले दिल खोलिए!

يٰبُنَيَّ	اَقِمِ	الصَّلٰوةَ
ऐ मेरे बेटे!	क़ाइम कर	नमाज़

(Luqman: 17)

जिस को आप नसीहत करना चाहते हों तो उस का दिमाग खोलने से पहले उस का दिल खोलिए! दिल खुल जाए तो इन्सान नसीहत क़ुबूल करने के लिए तैयार हो जाता है!

क़ुरआन

Luqman
Post: 12

भलाई का हुक्म दो! (1)

وَاْمُرْ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَانْهَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
और हुक्म दे	अच्छे काम का	और रोक	बुरी बात से

وَاصْبِرْ	عَلٰى مَآ	اَصَابَكَ ؕ
और सब्र कर	उस (तक्लीफ) पर जो	तुझे पहुंचे,

(Luqman: 17)

हिकमत के साथ भलाई का हुक्म दीजिये और बुराई से रोकिये!

क़ुरआन

Luqman
Post: 13

भलाई का हुक्म दो! (2)

وَاْمُرْ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَانْهَ	عَنِ الْمُنْكَرِ
और हुक्म दे	अच्छे काम का	और रोक	बुरी बात से

وَاصْبِرْ	عَلٰى مَآ	اَصَابَكَ ؕ
और सब्र कर	उस (तक्लीफ) पर जो	तुझे पहुंचे,

(Luqman: 17)

भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने में अगर लोगों की तरफ से कोई तक्लीफ पहुंचे तो उस काम को हरगिज़ ना छोड़िये बल्कि उस पर सब्र करते रहिये!

इआदह (क़ुरआन)

- दिमाग खोलने से पहले दिल खोलिए तब नसीहत फ़ायदा देगी! (يٰبُنَيَّ---)
- हिकमत के साथ भलाई का हुक्म दीजिये और बुराई से रोकिये! (وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ)
- भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने में तक्लीफ पहुंचे तो सब्र कीजिये! (وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ)

इआदह (हदीस)

- जो काम इन्सान सिर्फ अल्लाह की रिज़ा के लिए करे उस का शुमार अल्लाह की राह में होगा! (فَهُوَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ)
- हम से रोज़ाना गलतियाँ होती रहती हैं, इसलिए हम को रोज़ाना तौबा करते रहना चाहिए! (وَاللهِ اِنِّىْ لَأَسْتَغْفِرُ اللهَ ---)
- इस दुनिया में कामयाबी और इज़्ज़त उस को मिलती है जिस के अन्दर इन्किसारी होती है!(لَلّٰهُ أَشَدُّ فَرَحًا ---)

क़ुरआन

Luqman
Post: 15

अकड़ो मत! (1)

وَلَا تُصَعِّرْ	خَدَّكَ	لِلنَّاسِ
और मत फुला	अपना गाल (गुरूर से)	लोगों के सामने

(Luqman: 18)

गाल मत फुला यानी मत अकड़,

चाहे सामने वाला मज़दूर ही क्यों ना हो!

क़ुरआन

Luqman
Post: 16

अकड़ो मत! (2)

وَلَا تُصَعِّرْ	خَدَّكَ	لِلنَّاسِ
और मत फुला	अपना गाल (गुरूर से)	लोगों के सामने

(Luqman: 18)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख्स के दिल में राई के दाने के बराबर तकब्बुर (घमण्ड) होगा वो जन्नत में नहीं दाख़िल होगा!" (इब्ने माजह: 59)

इतरा कर मत चलो!

وَلَا تَمْشِ	فِى الْاَرْضِ	مَرَحًا
और ना चल	ज़मीन में	इतराते हुए

(Luqman: 18)

इतरा कर चलने वाला अल्लाह के नज़दीक नापसंदीदा है और इंसानों के नज़दीक भी! ऐसे चलने वाले की कोई दिल से इज्ज़त नहीं करता!

इआदह (क़ुरआन)

- गाल मत फुला यानी मत अकड़, चाहे सामने वाला मज़दूर ही क्यों ना हो! (وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ)
- राई के दाने के बराबर तकब्बुर वाला जन्नत में नहीं दाख़िल होगा! (وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ)
- इतरा कर चलने वाला अल्लाह के नज़दीक नापसंदीदा है और इंसानों के नज़दीक भी! (وَلَا تَمْشِ فِى الْأَرْضِ مَرَحًا)

इआदह (हदीस)

- इन्सान को हर वक़्त मौत की तय्यारी रखनी है! और वो है गुनाहों से पाकी, जिस का तरीका तौबा है! (اِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ---)
- ख्वाहिशात और हिर्स के पीछे ना भागो क्योंकि उन की इन्तिहा नहीं है! (أَحَبَّ أَنْ يَّكُوْنَ لَهُ وَادِيَانِ)
- सब्र से मदद हासिल कीजिये! (وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ)

दरमियानी चाल चलो!

فِى مَشْيِكَ	وَاقْصِدْ
अपनी चाल में	और मियानारवी इख़्तियार कर

(Luqman: 18)

ना बिल्कुल मर्यल चाल चलिए और ना अकड़ की!

शराफत वाली चाल हो!

क़ुरआन

Luqman
Post: 20

आवाज़ नीची रखो! (1)

وَاغْضُضْ	مِنْ صَوْتِكَ
और पस्त कर	अपनी आवाज़ को,

إِنَّ	أَنكَرَ الأَصْوَاتِ	لَصَوْتُ الْحَمِيرِ
बेशक	सब से बुरी आवाज़ों में से	अलबत्ता गधे की आवाज़ है!

(Luqman: 19)

हक़ बात कहने के लिए ऊँची आवाज़ की ज़रूरत नहीं होती!

क़ुरआन

Luqman
Post: 21

आवाज़ नीची रखो! (2)

وَاغْضُضْ	مِنْ صَوْتِكَ
और पस्त कर	अपनी आवाज़ को,

إِنَّ	أَنكَرَ الأَصْوَاتِ	لَصَوْتُ الْحَمِيرِ
बेशक	सब से बुरी आवाज़ों में से	अलबत्ता गधे की आवाज़ है!

(Luqman: 19)

अगर इन्सान गुस्से में हो और फिर भी नीची आवाज़ से बात करे तो गुस्सा को कंट्रोल करने में मदद मिलती है!

इआदह (क़ुरआन)

- ना बिल्कुल मर्यल चाल चलिए और ना अकड़ की बल्कि शराफत वाली चाल हो! (وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ)
- हक़ बात कहने के लिए ऊँची आवाज़ की ज़रूरत नहीं होती! (وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ)
- गुस्से के वक़्त नीची आवाज़ से बात करने से गुस्से को कंट्रोल करने में मदद मिलती है! (وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ)

इआदह (हदीस)

- सब्र इन्सान को बुरे लोगों के आगे गिरने ही नहीं देता! (وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللهُ)
- सब्र के ज़रिये इन्सान मुश्किलात में नहीं हारता! (وَمَنْ يَّتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللهُ)
- मोमिन अपनी ख़ुशहाली को इबादत, सदक़ा, खैरात के लिए इस्तेमाल करता है! (إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ)